B.Ed IInd Year

Paper- Creating An Inclusive Education

समावेशी शिक्षा का अर्थ : (Meaning of Inclusive Education) — समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसमे प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक शिक्षा स्तर की जाँच की जाती है। तत्पश्चात उन्हे दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है अत: यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो विशिष्ट क्षमता वाले बालको हेतु ही निर्धारित कि जाती है।

स्टीफन तथा ब्लैंकहर्ट के अनुसार- "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ (पूर्ण रूप से अपंग नही) बालको की सामान्य कक्षाओं मे शिक्षण व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानकीयकरण और अधिगम को बढावा देती है।"

समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक

सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है; जो कि शिक्षा को अपने में सिमटे हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है, तथा उपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है। समावेशी शिक्षा अधिगम के लिए नहीं अपितु विशिष्ट अधिगम के नये आयाम खोलती है। समावेशी शिक्षा एक सतही प्रक्रिया न होकर मनुष्यो के द्वारा मनुष्यो के विकास के लिए किया गया कुण्ठामुक्त प्रयास है।

* समावेशी शिक्षा की विशेषताएं :-

* समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिसके अंतर्गत शारीरिक रूप से वंचित बालक तथा तथा सामान्य बालक एकसाथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं। असमर्थ बालको को कुछ अधिक सहायता प्रदान कि जाती है। इसप्रकार समावेशी शिक्षा असमर्थ बालको के पृथक्कीकरण के विरुद्ध व्यावहारिक समाधान है।
* समावेशी शिक्षा विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। इसमे बहुत कम रूप से वंचित बालको का ही प्रवेश दिया जाता है। गम्भीर रूप से असमर्थ बालको सम्प्रेषण तथा अन्य प्रतिमा ग्रहण

करने के पश्चात इसमें प्रवेश दिलाया जाता है।

* इस शिक्षा का ऐसा स्वरूप दिया गया है जिससे सभी बालक को समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हो तथा वे समाज के अन्य लोगों की भांति आत्मनिर्भर होकर अपना जीवनयापन कर सके।
* यह समाज में अपंग तथा सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण तथा सम्बंध बनाने में समाज के प्रत्येक स्तर पर सहायक है। समाज में एक दूसरे के मध्य दूरी कम तथा आपसी सहयोग की भावना को बढ़ाती है।
* यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत शारीरिक रूप से वांचित बालक भी सामान्य बालकों के समान समझे जाते हैं तथा यह अपंग बालकों को उनके व्यक्तिगत अधिकारों के रूप में स्वीकार करती है।
* समावेशी शिक्षा - शिक्षण की समानता तथा अवसर जो अपंगों को अबतक नहीं दिये गये उनकी मूल रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक आयाम है।